असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की समस्या एवं भूमिका संघर्ष : एक प्रमुख समस्या नैनीताल नगर के कुटीर एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की कार्यस्थल सम्बंधित समस्याओं एवं भूमिका संघर्ष का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ किशोर कुमार*, डॉ दीपक कुमार**

सारांश

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। वह पारिवारिक एवं कार्य निष्पादन–व्यवस्था का अभिन्न अंग हैं। महिलाएं पारिवारिक गृह सीमाओं से बाहर निकलकर व्यवसायिक क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बना रही हैं। व्यवसाय सम्बन्धी कार्यों तथा परिवार के दायित्वों का निर्वहन करने में प्रायः उन्हें आन्तरिक संवेगात्मक अथवा भावात्मक द्वन्द का सामना करना पड़ता है। यद्यपि असंगठित क्षेत्र एक व्यापक क्षेत्र है। अतः प्रस्तुत शोध प्रपत्र में नैनीताल नगर में असंगठित क्षेत्र के अन्तर्गत कुटीर उद्योग क्षेत्र एवं सेवा क्षेत्र को अध्ययन की ईकाई मानकर, इन क्षेत्रों में कार्यरत कुल 248 महिलाओं को संगणना पद्धति के आधार चयनित कर महिलाओं में भूमिका संघर्ष सम्बंधित प्रमुख समस्या का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द– असंगठित क्षेत्र, महिला कार्मिक, भूमिका, संघर्ष।

प्रस्तावना

आधुनिक समाज व्यवस्था में सामान्यतः लोगों को एक से अधिक भूमिकाओं को निभाना पड़ता है। लोग प्रायः वही कार्य करना चाहते हैं जो उनसे अपेक्षा की जाती है। कभी–कभी लोगों को भूमिकाओं के निर्वहन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ भी आती हैं कि जब दो या दो से अधिक भूमिकाओं को एक साथ निभाना इतना कठिन हो जाता है कि हम किसी भूमिका को ठीक से निभाने में असमर्थ हो जाते हैं, तब भूमिका संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। भूमिका संघर्ष आधुनिक युग में एक समस्या है क्योंकि ओद्योगिक समाज के अर्न्तगत लोगों को प्रायः एक से अधिक भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है।[1]

18वीं एवं 19वीं सदी के सामाजिक परिवेश में औद्योगिकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया ने भी महिलाओं की प्रस्थिति को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता पनपी है। वे पुरूषों की आर्थिक दासता से मुक्त होकर घर की चहारदीवारी से निकलकर वाह्य जगत से परिचित हुई हैं। महिलाएं स्वयं विभिन्न उद्योगों एवं अन्य व्यवसायों में कार्य करने लगी हैं। वर्तमान समय में महिलाएं सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में पुरूषों के समान कार्य करने लगी हैं।[2]

औद्योगिकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप समाज में श्रमिक वर्ग का जन्म हुआ। जिसमें संगठित एवं असंगठित श्रमिक वर्ग थे। संगठित श्रमिक वे श्रमिक हैं, जो अपने रहन–सहन का स्तर सुधारने हेतु राष्ट्रीय स्तर पर संगठित होकर प्रयास करते रहते हैं जबकि असंगठित श्रमिक वे हैं जो अपनी आर्थिक दशा सुधारने हेतु संगठित होकर अपने न्योक्ताओं से अपने अधिकारों की बात नहीं कर पाते हैं। जिससे वह अपने अधिकारों से वंचित रह जाते हैं।

इस संदर्भ में कारखाना अधिनियम 1948 के अन्तर्गत असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक वे श्रमिक हैं जो कि प्रमुख प्रावधानों जैसे स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं कल्याण सम्बन्धी उपबन्ध आदि की परिधि से बाहर हैं। जबकि सामाजिक सुरक्षा अधिनियम 2008 के अनुसार, असंगठित क्षेत्र के श्रमिक वे श्रमिक हैं जो घरेलू कार्य, स्वरोजगार एवं वेतन पर कार्य कर रहे तथा जिनको अधिनियम की अनुसूची–II में शामिल न किया गया हो। जबकि ''व्यक्तिगत या स्वरोजगार के स्वामित्व वाले व्यवसाय जो उत्पादन, वस्तुओं की बिक्री या सेवाएं उपलब्ध कराने के कामों में संलग्न हैं और जहाँ श्रमिकों की संख्या दस से कम हो, असंगठित क्षेत्र कहलाता है"। इसके अतिरिक्त असंठित क्षेत्रों में "वह श्रमिक हैं जो गाँव अथवा शहरो में मजदूरी पर अस्थायी रुप से काम करते है। चूँकि यह श्रमिक वर्ग मुख्यतया बिखरा हुआ होता है, अतः इनका परस्पर संगठन नहीं हो पाता है"।[3]

असंगठित क्षेत्र एक व्यापक क्षेत्र है जिसमें महिलाओं का बड़ा भाग एक उद्यमी के रूप में कार्यरत है। परन्तु रोजगार

* असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, रा0 स्ना0 महाविद्यालय, बेरीनाग, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

** असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, रा0 स्ना0 महाविद्यालय, मुनस्यारी, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड़

के स्तर एवं गुणवत्ता की दृष्टि से वह संगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं से पीछे रह जाती हैं। भारत की कुल श्रम शक्ति में काम करने वाले लोगों का 85 प्रतिशत से ज्यादा असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है। भारत के महापंजीयक एवं 2011 की जनगणना से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार, भारत में महिला कार्मिकों की कुल संख्या 14.98 करोड़ है और ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में महिला श्रमिकों की संख्या क्रमशः 12.18 करोड़ तथा 2.8 करोड़ है। कुल 14.98 करोड़ महिला श्रमिकों में से 3.59 करोड़ महिलाएं खेतीहर मजदूर, जबकि 6.15 करोड़ कृषक तथा शेष महिला श्रमिकों में से 85 लाख महिलाएं घरेलू उद्योगों और 4.37 करोड़ अन्य श्रमिक के रूप में वर्गीकृत हैं।[4]

अध्ययन क्षेत्र एवं निदर्शन पद्धति – प्रस्तुत शोध पत्र की अध्ययन की ईकाई नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्र के कुटीर एवं सेवा क्षेत्रों में कार्यरत महिलायें हैं। नैनीताल नगर की 41.1% प्रतिशत महिलाएं मुख्य कर्मकार, सीमान्त एवं खेतिहर कर्मकार हैं, 24.0% महिलाएं कृषक कर्मकार के रूप में जबकि 5.7% घरेलू उद्योगों एवं 29.2% अन्य कार्यों में संलग्न हैं।[5]

प्रस्तुत शोध पत्र में नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्र के कुटीर एवं सेवा क्षेत्रों में कार्यरत 248 महिला कार्मिकों को संगणना पद्धति के आधार पर चयनित किया गया है। जिसमें कुटीर उद्योग क्षेत्र के मोमबत्ती निर्माण, सिलाई–बुनाई तथा साफ्ट टॉय (Soft Toy) निर्माण उद्योगों में कार्यरत् 168 तथा सेवा क्षेत्र के ब्यूटी पार्लर, होटल व्यवसाय तथा विभिन्न दुकानों में संलग्न 80 महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। जिनका विवरण निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया है ।

सारणी संख्या–1.01

अंसगठित क्षेत्र					
कुटीर उद्योग क्षेत्र	आवृत्ति	प्रतिशत	**सेवा क्षेत्र**	आवृत्ति	प्रतिशत
मोम्बत्ती निर्माण उद्योग	50	29.76	ब्यूटी पार्लर	30	37.5
सिलाई–बुनाई उद्योग	70	41.67	होटल व्यवसाय	08	10
साफ्ट टॉय उद्योग	48	28.57	विभिन्न दुकानों	42	52.5
योग	168	100	योग	80	100

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। वह पारिवारिक एवं कार्य निष्पादन–व्यवस्था का अभिन्न अंग हैं। महिलाएं पारिवारिक गृह सीमाओं से बाहर निकलकर व्यावसायिक क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बना रही हैं। व्यवसाय सम्बन्धी कार्यों तथा परिवार के दायित्वों का निर्वहन करने में प्रायः उन्हें आन्तरिक संवेगात्मक अथवा भावात्मक द्वन्द का सामना करना पड़ता है। ड़िसूजा (1963)[6], के अनुसार कार्यरत महिलाएं अधिकांशतः परिवार तथा बच्चों की जिम्मेदारियों से उत्पन्न समस्याओं से सर्वाधिक प्रभावित होती हैं, विशेषरूप से उस अवस्था में जब बच्चे शैशवावस्था में होते हैं। इन भूमिका संघर्षों के अतिरिक्त महिलाओं को कार्यक्षेत्रों में भी अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कार्य स्थल व घर के कार्यों में समायोजन करना, यह उनके लिए बड़ी समस्या होती है। जिसे वह किसी तरह अपनी सूझ–बूझ से सुलझा पाती हैं। इस आधार पर अध्ययनकर्ता ने प्रस्तुत शोध पत्र में कार्यरत महिलाओं की प्रमुख आधारभूत समस्याओं का अध्ययन किया है।

दोहरे काम की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में कार्यरत कामकाजी महिलाओं को अपनी नौकरी से संबंधित कार्यों के अतिरिक्त परिवार के भी अधिकांश कार्यों को पूर्ण करना पड़ता है। इस प्रकार इन महिलाओं पर सदैव कार्य का दबाव बना रहता है। इसका उनके स्वास्थ्य और मानसिक सन्तुलन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

कम मजदूरी की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में महिलाओं को केवल कुछ चुने हुए कार्यों में ही रोजगार के अवसर मिलते हैं। जैसेः– खेती, बागवानी, हस्तशिल्प, लघु उद्योग, चीनी मिट्टी तथा कार्यालयों से संबंधित कार्य। इन सीमित व्यवसायों में रोजगार की इच्छुक महिलाओं की संख्या अधिक होती है। असंगठित क्षेत्र में व्यवसायों की कमी व काम करने वालों की संख्या अधिकांश होने के कारण, महिलाओं को कम मजदूरी की समस्या का भी सामना करना पड़ता है।

दोयम स्थिति की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को दोहरे मापदण्ड की समस्या से भी रूबरू होना पड़ता है। कई नियोजक प्रसूति की स्थिति में छुट्टी तथा प्रसूति–हितलाभ, शिशु गृह की स्थापना की अनिवार्यता तथा महिलाओं को रात्रिकार्य और खतरनाक कामों पर कानूनी प्रतिबन्धों के कारण महिलाओं को नियोजित नहीं करना चाहते। इन कारणों के अतिरिक्त भारत पुरूष प्रधान समाज है। जिसकी झलक इस समस्या पर भी दिखाई देती है। असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलायें भी इस दोयम दर्जे की सामाजिक स्थिति का शिकार हैं। उन्हें समान कार्य व समान घण्टे कार्य करने के बाद भी पुरूषों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है।

कार्य की कठिन दशाओं की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को अपनी कार्य क्षमता के अनुपात से अधिक कठिन कार्यों का भी निर्वाह करना पड़ता है। विशेषकर शारीरिक कार्य वाले नियोजनों में लगातार कई घण्टों तक काम करना पड़ता है। कई कारखानों में उन्हें खतरनाक मशीनों या प्रक्रियाओं में भी नियोजित किया जाता है। कार्यस्थल पर उन्हें विश्राम के अभाव, अपर्याप्त प्रकाश और असुरक्षा, व्यवसयिक रोग, दुर्घटना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कार्यक्षेत्र में महिलाओं को मिलने वाली सुविधाओं की कमी की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं के सामने वित्त की समस्या तो है ही। नैनीताल में बहुत सारे गैर सरकारी संगठन हैं, जिनके माध्यम से महिलाएं काम कर रही हैं। जिनमें कार्यरत महिलाओं को देने के लिए पर्याप्त धन नहीं होता है। जिससे उन्हें कम वेतन पर ही कार्य करना पड़ता है। जिससे इन असंगठित क्षेत्र में कार्यशील महिलाओं को सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है।

बच्चों के पालन–पोषण की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में कार्यशील महिलाओं के सामने बच्चों के पालन–पोषण की समस्या बहुत ही महत्वपूर्ण समस्या होती है। व्यवसायिक जीवन में आगे बढ़ने में महिलाओं के सामने तब बड़ी समस्या आती है, जब उन्हें अपनी कामकाजी भूमिका के साथ–साथ मातृत्व का दायित्व भी निभाना पड़ता है। महिलाएं अपने कार्य के साथ, पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वाह भी करती हैं। जिससे उन्हें भूमिका, संघर्ष एवं तनाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

शिक्षा की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं में शिक्षा का अभाव पाया जाता है। नैनीताल के संदर्भ में पुरूषों की तुलना में स्त्रियों के बीच शिक्षा का प्रसार अधिक है। परन्तु आज भी अधिकांश ग्रामीण महिलायें अशिक्षित हैं। जिस कारण आज भी महिलाएं अपने अधिकारों से वंचित हैं। जागरूकता का अभाव कई समस्याओं को जन्म देता है उनमें से एक अशिक्षा भी है।

पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन की समस्या :– इस क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं के पास समय का अभाव बहुत अधिक होता है। इस कारण वह पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन नहीं कर पाती हैं। कार्य से वापसी के बाद, घर के सदस्य उन से यही अपेक्षा करते हैं, कि चाय–नाश्ता व खाना उनके द्वारा ही मिले और वे परिवार के सदस्यों की इस अपेक्षा को खुशी–खुशी पूरा भी करना चाहती हैं और पति भी यह अपेक्षा रखते हैं कि उनके बच्चों की देखभाल स्वयं मां के द्वारा ही हो। काफी प्रयास के बाद भी असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं में 'समय का अभाव' एक प्रमुख समस्या है। जिन पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन वे अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानकर करना चाहती हैं किन्तु व्यवहारिक रूप से समय का अभाव इसमें बाधक है।

निर्णय लेने में स्वतंत्रता की समस्या :– यह एक बहुत बड़ी समस्या है। इसे एक विडम्बना ही कहना चाहिए कि आज की महिलायें कार्यकारी होने के बावजूद अपने बारे में कोई निर्णय नहीं ले पाती हैं और उनका व्यवसाय करने का निर्णय परिवार के सदस्यों की ईच्छा पर निर्भर करता है।

स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ :– असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलायें आर्थिक रूप से संपन्न न होने के कारण कुपोषण की शिकार होती हैं साथ ही वे स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न समस्याओं से घिरे रहती हैं। समुचित भोजन का अभाव, कुपोषण की दयनीय दशा, समुचित चिकित्सा के साधनों की कमी आदि के कारण निर्धन व्यक्तियों में अशक्तता बीमारी, अकाल मृत्यु, विकलांगता आदि संबंधी समस्याएं और भी जटिल और गम्भीर होती हैं।

स्वयं की रक्षा की समस्या :– आज के आधुनिक युग में महिलाएं अधिकतर स्वयं की रक्षा करने में स्वयं को असमर्थ पाती हैं क्योंकि कामकाजी होने के कारण महिलाओं को अपने कार्य स्थल पर अकेले ही जाना पड़ता है, यदि अधिक दूरी पर कार्य के लिए जाना पड़े तो, रास्ते पर कभी उनसे अपराध होने का भय लगा रहता है, क्योंकि वर्तमान स्थिति में महिलाओं पर अधिक घटनाऐं हो रही हैं। कुछ कुलीन परिवार में महिलाओं को नौकरी या घर से बाहर जाने की आज्ञा नहीं मिलती है, जिसके कारण शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक व सांस्कृतिक स्तर पर भी महिलाओं को आगे आने से काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है और उनके परिवारों में महिलाओं को अपमान की दृष्टि से देखा जाता है। इन समस्याओं के अतिरिक्त

महिलाओं को घर एवं कार्यस्थल पर भूमिका संघर्ष एवं तनाव जैसी समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है।[7]

भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के चलते महिलाओं में भूमिका संघर्ष एवं तनाव की समस्या एक महत्वपूर्ण पहलू हो गया है। पारंपरिक रूप से भारतीय महिलाएं पारिवारिक व्यवस्था के अंदर रहकर ही कार्य करती थीं। वर्तमान में वे पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर कई संगठनों में कार्यरत हैं। परिणामस्वरूप आधुनिक महिलाएं दो प्रकार की व्यवस्थाओं में जीवनयापन करती हैं तथा उन्हें परिवार के साथ–साथ रोजगार से सम्बद्ध भूमिकाएं भी निभानी पड़ती हैं। जिस कारण कामकाजी महिलाओं को भूमिका जनित तनाव का सामना करना पड़ता है। साथ ही साथ आर्थिक अनिवार्यताओं के चलते समाज में अधिकांश महिलाएं कई उद्योगों एवं प्रतिष्ठानों में कार्यरत हैं। जिन महिलाओं को स्वयं के कार्य से संतोष मिलता है उन्हें अपनी उपलब्धि की कीमत भी मिलती है, परन्तु व्यवसाय के साथ–साथ उन्हें गृहस्थी पर भी विशेष ध्यान देना जरूरी होता है। अभी भी महिलाओं को अपनी पारंपरिक भूमिका में अलग से कोई सहायता नहीं मिलती है। यद्यपि महिलाओं के दायित्व बढ़ गये हैं, क्योंकि सभी के लिए यह सम्भव नहीं होता कि वे जितना समय कार्यस्थल पर देती हैं, उतना घरेलू कार्यों में भी दें। जिसके कारण ऐसी परिस्थितियों में महिलाओं को स्वयं के व्यवहार के साथ सामंजस्य बिठाना पड़ता है जो महिलाओं के कार्मिक जीवन में तनाव उत्पन्न करता है। इन परिस्थितिओं से सामंजस्य न कर पाने के कारण कार्मिक महिलाओं में तनाव एवं भूमिका संघर्ष दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसी संदर्भ में नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं को घर एवं कार्यस्थल पर न्योक्ता एवं साथियों के व्यवहार आदि सम्बंधित समस्याओं का विश्लेषण निम्नतालिका द्वारा किया गया है।

सारणी संख्या –1.02

कार्यस्थल पर होने वाले तनाव के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

असंगठित क्षेत्र							
		कुटीर उद्योग क्षेत्र		सेवा क्षेत्र		योग	प्रतिशत
क्रम संख्या	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत		
1	साथियों के व्यवहार से	21	12.50	12	15.00	33	13.30
2	न्योक्ता के व्यवहार से	33	19.64	08	10.00	41	16.54
3	सैलरी समय पर न मिलने पर	75	44.64	24	30.00	99	39.92
4	अन्य	39	23.22	36	45.00	75	30.24
5	योग	168	100	80	100	248	100

उपरोक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि अंसगठित क्षेत्र में कार्यरत अधिकांश 39.92 प्रतिशत महिलाओं का सैलरी समय पर न मिलने पर तनाव महसूस होता है। जिस कारण उनको आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा 16.54 प्रतिशत महिलाओं को न्योक्ता के व्यवहार से तनाव महसूस होता है। जबकि 13.00 प्रतिशत महिलाओं को कार्यस्थल पर अपने साथियों के व्यवहार से तनाव महसूस होता है। अन्य कारणों की समस्याओं से सम्बंधित 30.24 प्रतिशत महिलाओं को कार्यस्थल पर तनाव होता है। इन कारणों में महिलाओं की परिवार एवं प्रसूति से सम्बंधित समस्याएं होती हैं। अतः उपरोक्त तालिका द्वारा स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र की अधिकांश महिलाएं ऐसी हैं जिनको केवल कार्यस्थल पर तनाव होता है।

समाज में व्यक्ति को दो भिन्न परिस्थितियों की भूमिका एक साथ निभानी पड़ती है। यदि उनमें विरोधाभास हो तो उसे हम भूमिका संघर्ष कहते हैं। भूमिका संघर्ष के लिये समाज के सांस्कृतिक मूल्य भी उत्तरदायी हैं। आधुनिक एवं परिवर्तनशील समाजों में भूमिका संघर्ष अधिक पाया जाता है क्योंकि यहां नवीन एवं पुराने मूल्य साथ–साथ पाये जाते हैं । समाज में मनुष्य विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करता है। एक व्यक्ति जिस प्रकार से एक परिस्थिति से सम्बंधित विशेषाधिकारों एवं सुविधाओं का उपभोग करता है, उसे ही भूमिका संघर्ष कहते हैं। लुण्डबर्ग, (1954:262)[8] के अनुसार विभिन्न भूमिकाओं को एक साथ निभाना आसान नहीं होता है। अतः भूमिका संघर्ष की स्थिति में प्रभावी भूमिका का चयन कर एक या दो भूमिका छोड़ देते हैं। कामकाजी महिलाओं को अपनी नौकरी से सम्बद्ध कार्यों के अतिरिक्त घर के भी कामकाज देखने पड़ते हैं। इस प्रकार उन पर काम का बोझ भी अधिक होता है। साथ ही उन्हें कार्यस्थल पर भी दोहरी भूमिका एवं संघर्ष का सामना करना पड़ता है, जिसका उनके स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। महिलाओं को

कार्यस्थल पर एक कार्मिक की भूमिका के साथ अन्य भूमिका भी निभानी पड़ती है जिससे महिलाओं में मानसिक तनाव एवं चिड़चिड़ापन देखने को मिलता है। इसी संदर्भ में अध्ययनकर्ता द्वारा निम्न भूमिकाओं के दोहन द्वारा उत्पन्न भूमिका संघर्ष को निम्नतालिका द्वारा विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या –1.03

विभिन्न भूमिकाओं द्वारा भूमिका संघर्ष होने के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

असंगठित क्षेत्र							
		कुटीर उद्योग क्षेत्र		सेवा क्षेत्र		योग	प्रतिशत
क्रम संख्या	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत		
1	मां और कार्मिक की भूमिका में	105	62.50	16	20.00	90	36.29
2	पुत्री और कार्मिक की भूमिका में	22	13.09	23	28.75	51	20.56
3	विद्यार्थी और कार्मिक की भूमिका में	28	16.67	38	47.50	79	31.86
4	अन्य	13	7.74	03	3.75	28	11.29
5	योग	168	100	80	100	248	100

कार्यस्थल पर अधिकांश महिलाएं भूमिका संघर्ष के कारण ग्रसित होती हैं। जिस कारण महिलाओं को भूमिका संघर्ष से उत्पन्न तनाव का सामना करना पड़ता है। चूंकि दो असंगत भूमिकाओं का निर्वहन करने पर एक भूमिका को त्यागना पड़ता है। इसी संदर्भ में उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 36.29 प्रतिशत महिलाओं को कार्यस्थल पर मां एवं कार्मिक की भूमिका निभानी पड़ती है। जबकि 20.56 प्रतिशत महिलाओं को पुत्री एवं कार्मिक की भूमिका निभानी पड़ती है तथा 31.86 प्रतिशत महिला कार्मिकों को विद्यार्थी एवं कार्मिक की भूमिका निभानी पड़ती है। कार्यस्थल पर 11.29 प्रतिशत महिलाएं ऐसी भी हैं जिनको अन्य भूमिकाओं के कारण भूमिका संघर्ष का सामना करना पड़ता है। जिससे स्पष्ट होता है कि महिलाओं को कार्यस्थल पर एक कार्मिक की भूमिका के साथ साथ अन्य भूमिकाएं भी निभानी पड़ती हैं जिससे महिलाओं में मानसिक तनाव एवं चिड़चिड़ापन देखने को मिलता है।

असंगठित क्षेत्र में कामकाजी महिलाओं को अधिक समय तक कार्य करना पड़ता है। प्रायः महिलाएं लगभग 8–9 घण्टे घरों से बाहर कार्य करती हैं। जिससे महिलाओं को घर और बाहर दोहरी भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है। इस कारण कामकाजी महिलाएं घर के सदस्यों की देख–रेख अच्छी तरह से नहीं कर पाती हैं। एक ओर जहां उन्हें घर के दैनिक कार्यों को तो सम्पन्न करना ही है साथ में उन्हें कार्यस्थल पर लगभग 8–9 घण्टे कार्य करना पड़ता है। जिसकी वजह से वे अपने परिवार को अच्छे से समय नहीं दे पाती हैं। क्योंकि महिलाओं के कार्यकारी होने से उनके पास हमेशा समय की कमी रहती है। जिससे पति और अन्य सदस्यों को लगता है कि वह उनका पूर्ण ध्यान नहीं रख रही है। इसी संदर्भ में अध्ययनकर्ता द्वारा घर व कार्यस्थल में कार्य की अधिकता के कारण उत्तरदात्रियों के तनाव अनुभव करने का विश्लेषण निम्नतालिका द्वारा करने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या –1.04

घर व कार्यस्थल में कार्य की अधिकता के कारण तनाव अनुभव करने के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

असंगठित क्षेत्र							
		कुटीर उद्योग क्षेत्र		सेवा क्षेत्र		योग	प्रतिशत
क्रम संख्या	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत		
1	हमेशा	55	32.74	24	30.00	79	31.85
2	कभी–कभी	68	40.48	35	43.75	103	41.53
3	बिल्कुल नहीं	45	26.78	21	26.25	66	26.62
4	योग	168	100	80	100	248	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत अधिकांश 73.38 प्रतिशत महिलाएं घर व कार्यस्थल में कार्य की अधिकता के कारण तनाव अनुभव करती हैं। जिसके परिणामस्वरूप कार्यस्थल व घर दोनों में मानसिक एवं शारीरिक दोनों समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जबकि कार्यस्थल में 26.62 प्रतिशत महिलाएं ऐसी भी पायी गईं जो घर व कार्यस्थल में कार्य की अधिकता के कारण भी तनाव अनुभव नहीं करती हैं।

नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की भूमिका संघर्ष एक प्रमुख समस्या है। कार्यस्थल व घर के कार्यों में समायोजन करना, यह उनके लिए बड़ी समस्या होती है। कार्यस्थल पर अधिकांश महिलाऐं भूमिका संघर्ष के कारण ग्रसित हैं। जिस कारण महिलाओं को भूमिका संघर्ष से उत्पन्न तनाव का सामना करना पड़ता है चूंकि दो असंगत भूमिकाओं का निर्वहन करने पर एक भूमिका को त्यागना पड़ता है। इसी संदर्भ में अधिकांश महिलाओं को कार्यस्थल पर मां एवं कार्मिक की भूमिका निभानी पड़ती है। साथ ही महिलाओं को पुत्री, कार्मिक तथा विद्यार्थी की भी भूमिका निभानी पड़ती है। जिससे महिलाओं में मानसिक तनाव एवं चिड़चिड़ापन देखने को मिलता है। जिसके परिणामस्वरूप कार्यस्थल व घर दोनों में मानसिक एवं शारीरिक दोनों समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन के विश्लेषण द्वारा ज्ञात होता है कि कार्यरत महिलाओं को दोहरी भूमिका का निर्वहन करना पड़ता है। इसीलिए उन्हें संयुक्त परिवार की व्यवस्था को अपनाना चाहिए, जिससे उनके बच्चों की सही देखभाल हो सके। साथ ही सरकार एवं संगठनों द्वारा कार्यरत महिलाओं के लिए कार्यस्थल पर ही शैक्षिक कार्य के अनुरूप आय, मनोरंजन तथा अन्य सम्बंधित योजनाओं एवं प्रावधानों को नियोजित किया जाना चाहिए ताकि महिलाओं में पायी जाने वाली भूमिका संघर्ष सम्बंधी समस्याओं को कम से कम किया जा सके।

सन्दर्भ सूची

1. Goode,William J.(1960)., “Theory of Role Strain”,American Sociological Review.25:483-485.
2. Bhagwati J. & Srinivas.T.N, (1993)., “Indians Economic Reforms”, Ministry of Finance,Government of India Press,New Delhi.
3. भारत 2016., सन्दर्भ ग्रन्थ, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, पृ0– 630–631.
4. www.census2011.co.in/data/town//800331-nainital-uttarakhand-html
5. www.census2011.co.in/data/town/800331-nainital-uttarakhand-html.
6. De Souza,C.(1963), “The Call of Working Mother”, Social Action.p.640-646.
7. सिन्हा0पी0आर0, इन्दुबाला, श्रम एवं समाज कल्याण, भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स), 2011, पृ0–470–475।
8. लुण्ड़बर्ग, जी0ए0.(1954), सोसियोलॉजी, हार्पर एण्ड़ ब्रादर्स पब्लिसर्स, न्यूयॉर्क।